स्त्रियों का ऐतिहासिक अध्ययन एवं जमनालाल बजाज के विचारों में महिला भाक्ति

रामा देवी, भाोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, सनराइज विष्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

प्रस्तावनाः— भारतीय ज्ञान परम्परा एवं चिन्तन में स्त्रियों को लक्ष्मी का स्थान प्राप्त है। स्त्रियों की स्थिति में समय–समय पर परिवर्तन भी होते आया है। वर्तमान के पूँजीवादी वि"व में स्त्रियों को पुरूषों की तरह उत्पादन की कार्य"ाील पूँजी माना गया है और नारियों के स"ाक्तिकरण की दि"ाा में प्रयोग एवं प्रयत्न किये जा रहे है। वैदिक काल से वर्तमान तक महिलाओं की स्थिति एवं चिन्तन का अध्ययन किया जाता रहा है– वर्तमान में ि"ाक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसे प्राप्त करना महिलाओं की स्थिति में सुधार एवं तरक्की के लिये आव"यक है। ि"ाक्षा द्वारा ही सभी अंधवि"वास, कुरीतियाँ, आडम्बर, बाल– विवाह आदि का विरोध किया जा सकता है। शैक्षिक प्रयासों से ही अधिकार, स्वतंत्रता और आर्थिक गतिविधियों को प्राप्त किया जा सकता है।

जमनालाल बजाज ने महिला शक्ति के उत्थान हेतु काफी प्रयास किये। बजाज जी ने आर्थिक सहयोग भी महिलाओं के कल्याण हेतु प्रदान किया। महिलाओं की ि"ाक्षा तथा आर्थिक स्थिति, आत्मवि"वास और आत्म निर्भरता को सुदृढ करने हेतु शासन एवं प्र"ाासन को स्त्री सम्बन्धी योजनाओं का गम्भीरता से पालन करवाया जाना अति आव"यक है। सरकार एवं व्यक्ति का मिला जुला प्रयास महिला स"ाक्तिकरण के मार्ग अव"य प्र"ास्त करेगा।

साहित्यिक समीक्षाः— The Journal of Meerut University History Alumni (MUHA), A Half Yearly Research Journal of History, Vol. XIV, 2009, ISSN 0973-5577 में शोधार्थी ने पाया कि वैदिक कालीन समाज में महिलाओं की स्थिति एवं आर्थिक जीवन और गुप्त कालीन समाज में स्त्रियों की क्या द"ाा रही आदि का अध्ययन किया।

अर्द्धवार्षिक अनुसंधानिका, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान की शोध पत्रिका, रजि0नं0– 1151/2008–09 वर्ष – एक –अंक–प्रवे"ाांक में नारी अस्मिताः परम्परा, प्रगति और प्रयोग में पाया कि किस प्रकार नारी अस्मिता को उत्तरोत्तर प्रगति के मार्ग पर किन प्रयोगों द्वारा पहुँचाया जा सकता है, योजनाऐं उनके स"ाक्तिकरण हेतु लायी जानी चाहिये। ि"ाक्षा, जागरूकता, अधिकार प्रदान किया जाना अति आव"यक है। नारी स"ाक्तिकरण का राजनीतिक एवं शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन के अन्तर्गत नीतियाँ एवं चुनौतियाँ महिलाओं की द"ाा एवं दि"ाा में सुधार हेतु आव"यक है।

समाज विज्ञान शोध पत्रिका— A Half Yearly Journal of Social Sciences, Vol. V, No.1, April- Sep, 2007 Meerut, में ग्रामों में महिलाओं की द"ाा के सम्बन्ध में अध्ययन किया।

A Journal of Asia for Democracy and Development, A Quarterly Journal of Social Sciences, Vol. XVII (4) 2017, ISSN 0973- 3833, Morena में तीन तलाकः समस्या और समाधान एवं समाज में महिलाओं और बालिकाओं की स्थिति के सम्बन्ध में अध्ययन किया।

पुस्तक श्रीमन्नारायण द्वारा लिखित ''आधुनिक भारत के निर्माता जमनालाल बजाज'' सूचना और प्रसारण मत्रांलय भारत सरकार, नई दिल्ली, 1976 के अन्तर्गत शोधार्थी ने महिलाओं की दि"ाा में उत्थान हेतु जमनालाल बजाज द्वारा किये गये प्रयासों के सम्बन्ध में अध्ययन किया।

पुस्तक ''श्रेयार्थी जमनालाल जी'' रचित हरिभाऊ उपाध्याय, सत्साहित्य प्रका"ान, नई दिल्ली, 1951 में बाल– विवाह, विधवाओं की द"ाा एवं बालिकाओं की ि"ाक्षा के सम्बन्ध में जमनालाल बजाज के विचारों का अध्ययन किया।

स्त्रियों की तरक्की जरूरी है लेकिन जब मैं वर्तमान पीढ़ी की युवतियों के जीवन को पुरानी पीढ़ी की महिलाओं के जीवन से तुलना करता हूँ तब मुझे अक्सर शक हो जाता है कि आजकल स्त्रियों की उन्नति– उत्थान है या पतन। कॉलेजों से निकली हुई युवतियों के कृत्रिम जीवन और उनके कमजोर शरीर देखकर निरा"ाा की भावनाऐं मन में उत्पन्न हो जाती है। स्त्री ि"ाक्षा का क्या उद्दे"य होना चाहिये ? अगर ि"ाक्षा द्वारा हमारी बहनों के दिमाग, दिल और शरीर तीनों का ही स्वाभाविक विकास न हुआ तो फिर स्त्री ि"ाक्षा की पुकार किस काम की है। तुम ि"ाक्षा ग्रहण करने के बहाने भारत की संस्कृति से दूर मत भागो।[1]

प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रेयी, गायत्री, सुलभा आदि स्त्रियाँ ही थी जो अपने तेज और बल से समाज को प्रभावित करती थी। वही तेज और बल आज भी है वह कही जा थोडे ही सकता है। समय के फेर से जैसे ही दवाया गया वैसे ही जगाया जा सकता है, उसके अनुकुल वातावरण आज उपस्थित हो रहा है।

दे"ा, धर्म और कालानुसार सदा से मातृ शक्ति के द्वारा समाज की सेवा तो होते ही आयी है। घर– परिवार, बालक–बालिकाऐं और गौमाताऐं सभी का लालन– पालन दया और प्रेम से ही होता है। यही मातृ शक्ति का स्वाभाविक संस्कार है। स्त्री शक्ति की महिमा जितनी गाऐं उतनी थोडी ही है। स्त्री शक्ति बडी बलवान है। वह मानव का पैदा करने वाली माता है। दया, धर्म और त्याग की मूर्ति है।[2]

ऋग्वैदिक काल में जन व धन की सुरक्षा के लिये सामूहिक परिवार की व्यवस्था परम आव"यक थी। परिवार में नारी का वि"ाष्ट महत्व एवं आदर था। मनुस्मृति पति तथा पत्नी को एक रथ के दो पहिये मानते हुये कभी अलग न होने का निर्दे"ा देती है। शतपथ ब्रह्मण में पत्नी को पति की अर्धांगिनी कहा गया और वह सभी सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो में हिस्सा लेती थी। स्त्रियाँ स्वेच्छा से विवाह करती थी। सती प्रथा सार्वजनिक रूप से मान्य न थी। स्त्रियाँ युद्ध क्षेत्र में जाति थी। यद्वपि स्त्रियों का स्थान सम्माननीय था।

उत्तर वैदिक काल में विवाह को एक पवित्र बन्धन माना जाता था। वि"ाष्ठ धर्मसूत्र में पत्नी को किसी भी स्थिति में त्याज्य नही माना गया है। मौर्य काल में स्त्रियों की द"ाा स्मृति काल से अच्छी थी तथा उन्हें पुनर्विवाह की अनुमति थी फिर भी उनकी स्थिति कोई वि"ोष अच्छी नही थी। मौर्य युग में अनेक ऐसी स्त्रियों का भी उल्लेख मिलता है जो पारिवारिक जीवन व्यतीत नहीं करती थी तथा गणिका का जीवन यापन करते हुये राजा का मनोरंजन करती थी। स्त्रियों की भलाई के लिये अ"ोक ने ''स्त्री– अध्यक्ष– महामात्र'' की नियुक्ति की।[3]

गुप्त काल में एक पत्नी प्रथा प्रचलित थी केवल शासक और धनवान वर्ग में ही बहुपत्नी प्रथा के प्रमाण देखने को मिले। विधेवा विवाह पर कोई प्रतिबंध न था पर्दा प्रथा नहीं थी। अमरकोष में स्त्री– शिक्षक और वेदपाठियों का वर्णन किया गया है। याज्ञवल्क्य स्मृति में पत्नी को भी पति की सम्पत्ति का अधिकारी बताया गया है। गुप्त काल में आद"ा पत्नी की कल्पना की गयी तथा उसके उत्तरदायित्वों और नैतिकता पर वि"ोष बल दिया गया उसे सभी प्रकार की सुरक्षा भी प्रदान की गयी थी।[4]

हर्षकालीन समाज में अन्तर्जातीय विवाह और खान–पान सम्भव था। सती प्रथा अधिक प्रचलित हो गयी। समाज में बहु विवाह की प्रथा थी। स्त्री–पुरूष दोनों की ि"ाक्षा पर ध्यान दिया जाता था। चोल काल में अनुलोम और प्रतिलोम दोनों ही प्रकार के विवाह होते थे स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी। सातवहान व"ा में स्त्रियों धार्मिक कार्यो में भाग लेती थी और रे"ामी कपडों का घूंघट लगाती थी।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी समानता तथा नारी ि"ाक्षा पर बल दिया उन्होंने कहा की स्त्री ि"ाक्षा के अभाव में एक ि"ाक्षित, सबल और प्रगति"ाील राष्ट्र का निर्माण असम्भव है। उन्होंने बाल–विवाह, बहुविवाह, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, सती प्रथा आदि का विरोध किया और अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन किया। समान सुधारों तथा सामाजिक न्याय की प्रतिष्ठा हेतु दयानन्द का आग्रह केवल सामाजिक चिंतन में ही व्यक्त नहीं हुआ अपितु उन्होंने समान सुधार के प्रति अपनी निष्ठा को कर्म में भी उतारा वे जीवन पर्यन्त विभिन्न सामाजिक रूढियों, अंधवि"वासों और पाखण्डों के विरूद्ध संर्घषरत रहे। उनके द्वारा स्थापित संस्था आर्य समाज ने भारत में सामाजिक और राजनीतिक जागृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका का निर्वाह किया।[5]

यह बात कुछ अजीब सी लगती है, लेकिन इसमें रत्ती भर भी असत्य नहीं है कि जमनालाल जी नारी समाज को पुरूष समाज से बहुत ऊपर मानते थे तत्कालीन समाज में नारी की जो स्थिति थी उससे उनको बड़ा असन्तोष रहता था। इसीलिये महिलाओं के उत्थान में जमनालाल जी की गहरी रूचि थी। यह उत्थान ि"ाक्षा के जरिये ही सम्भव था। इसी बात को ध्यान में रखते हुये उन्होंने वर्धा में महिला ि"ाक्षा मण्डल की स्थापना की उनकी सहायता से राजस्थान की अनेक महिला कार्यकर्ताओं ने इस ि"ाक्षा केन्द्र में ि"ाक्षण प्राप्त किया और बाद में अपने–अपने क्षेत्र में महिला जागरण और उत्थान का काम किया। सीकर जाट बोडिंग, विद्याभावन उदयपुर, चोरडिया कन्या गुरूकुल, आद"ार्ा विद्यालय पोहरी, तथा वनस्थली विद्यापीठ आज भी उनके इन सदप्रयासों के प्रमाण के रूप में वहाँ विद्यमान है और उनकी गुणगाथा का बखान कर रहे हैं।

04 नवम्बर 1941 को जमनालाल बजाज ने कहा कि सारी सृष्टि को माता के रूप में देखकर मैं अपनी पुत्र भावना का विकास करना चाहता हूँ। यह मार्ग मुझे मेरी गौमाता ने दिखा दिया है। प्रत्यक्ष रूप से गौमाता और अप्रत्यक्ष रूप से मातृजाति की सेवा करने का मैने संकल्प किया है।

जानकी देवी बजाज 1933 में पर्दा प्रथा के विरोध में प्रचार करने कलकत्ता गयी थी तब गाँधी जी ने उनसे कहा था– प्रिय भगनी आप बहनों से पर्दा तुडवाने के लिये कलकत्ता जा रही है– इसलिये धन्यवाद। पर्दा वहम ही नहीं है– उसमें मुझे पाप की बू आती है। पर्दा किससे रखें? क्या स्त्री अपनी पवित्रता बिना पर्दा किये नही रख सकती है? पवित्रता मानसिक बात है जो सभी पुरूषों में सहज होनी चाहिये। यदि इस बुद्धि प्रदान युग में स्त्री धर्म की रक्षा करना चाहती है तो उसे दरिद्रनारायण की सेवा करनी होगी। शिक्षण लेना होगा। विद्या पाने का कार्य पर्दा रखने के साथ कभी नहीं चल सकता है।[6]

स्त्रियों के हाथ में महान शक्ति है। दुनियाँ में जितने भी सत्पुरूष हुये है उनकी मातायें धर्म परायण थी जिस घर की स्त्रियाँ भगवान का स्मरण करती है, सत्य का पालन करती है, प्रेम भाव से रहती है– उस घर में श्रेष्ठ पुरूष जन्म प्राप्त करते हैं। मनुष्य के हृदय में एक शक्ति है जिससे उसका जीवन समृद्ध हुआ है। मनुष्य प्रेम पर भरोसा रखता है, प्रेम से पैदा हुआ और प्रेम से पलता है। स्त्रियाँ समाज का जिम्मा उठाती हैं तो समाज का कल्याण होगा। बहने बच्चों को सम्हालती है। इसीलिये वे जो सीखी हुयी होंगी वही बच्चें सीखेगें। स्त्रियाँ अपने बच्चों को सचरित्र बनायेगी तो दे"ा को अच्छे नागरिक मिलेगें। जो बोध दे और हित की बात समझा दे उसी का नेतृत्व करना चाहिये। स्त्रियों को ज्ञान के साथ भक्ति भी चाहिये उनका ज्ञान गहरा होना चाहिये उसके लिये ज्ञान साधना करनी चाहिये इस ज्ञान के साथ भक्ति जोडी जायेगी तब समाज का मार्ग द"ार्न कर सकेंगी। स्त्रियों की वाक्शक्ति खुलनी चाहिये, चिंतन शक्ति भी बढनी चाहियें। मैं चाहता हूँ की स्त्रियों को ज्ञान विज्ञान में अग्रसर होना चाहियें।[7]

सन् 1926 में अग्रवाल महासभा में सभापति की हैसियत से जमनालाल बजाज ने महिला सुधार के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये थे– हम लोग स्त्री ि"ाक्षा के लाभ दिन व दिन समझ रहे है पर ि"ाक्षा का रूख पुस्तकों की अपेक्षा सदाचार की ओर अधिक रहना चाहिये। गृहजीवन की आव"यकता पर उसमें पूरा ध्यान दिया जाना चाहिये और ि"ाक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिये जिससे स्त्रियों के शरीर, मन और आत्मा की उन्नति की पूरी सुविधा रहें।[8]

जमनालाल बजाज ने बाल–विवाह का पुर्णतः विरोध किया। विधवाओं की द"ाा को सुधारने के लिये वि"ोष उपाय और प्रयत्न किये। स्त्री ि"ाक्षा से सम्बन्धित उन्होंने अपनी डायरी में लिखा है कि सामाजिक हित के लिये लडकियों को ि"ाक्षित करना अति आव"यक है। हमारे समूचे समाज में कानून और रूढ़ियों की ओर से औरतों को जो दर्जा मिला है उसमें कई खामियाँ हैं और उन्हें जड– मूल से सुधारने की जरूरत है जिस रूढ़ि और कानून बनाने में स्त्री का कोई हाथ नही था और जिस के लिये सिर्फ पुरूष ही जिम्मेदार है उस कानून और रूढ़ि के जुल्मों ने स्त्री को लगातार कुचला है।[9]

स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि ''स्त्रियों को सदैव असहायता और दूसरों पर दासवत् निर्भरता की ि"ाक्षा दी गयी हैं''।[10]

18 जनवरी 1900 में कैलिफोर्नियाँ के मैसोडेना स्थित शैक्सपीयर क्लव में भारतीय नारी सम्बन्धी प्र"नों के उत्तर देते हुये स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि ''जैसा आपका आद"ार्ा है, आप वैसे ही हो जायेंगे। यदि आपका आर्द"ा अनित्य है, पार्थिव है तो आप वैसे ही हो जायेंगे। यदि आपका आद"ार्ा जड़ है तो आप भी जड़ हो जायेंगे। स्मरण रहे हमारा आद"ार्ा है परमात्मा एक मात्र वही अविना"ाी है अन्य किसी का अस्तित्व नहीं है और अविना"ाी परमात्मा की भांति हम भी सदा जीवित रहेगें।''[11]

महात्मा गाँधी जी ने कहा कि स्त्रियों के अधिकारों के विषय में मैं अपनी बात पर अटल रहूँगा। मेरे विचार में उसके ऊपर ऐसा कोई कानूनी प्रतिबन्ध नहीं लगा हुआ होना चाहिये जो कि पुरूष के ऊपर न लगा हो। मुझे पुत्रियों तथा पुत्रों के साथ पूर्णतः समानता का व्यवहार करना चाहिये।[12]

<u>भोध पत्र की उपयोगिता एवं महत्वः</u>– शोध पत्र आने वाली पीढी के लिये एवं जमनालाल बजाज के स्त्री सम्बन्धी विचारों के अध्ययन हेतु अपना महत्वपूर्ण स्थान रखेगा। समाज में व्याप्त आडम्बरों के विरोध के लिये स्त्रियाँ मुखर हों ऐसी मानसिकता से इस शोध पत्र को लिखा गया है। महिलाओं की उन्नति में ही परिवार, समाज, राज्य एवं वि"व का कल्याण निहित है। बेटी की ि"ाक्षा अन्य सभी कार्यों के ऊपर स्थान रखती है, इसको परिवार एवं समाज को ध्यान रखना चाहिये।

निश्कर्शः–

सामाजिक कुरीतियों, प्रथाओं, अन्धवि"वास आदि ने भी महिलाओं को जकडे रखा है। मानसिक व शारीरिक यातनाओं से वे घोर निरा"ाा की ि"ाकार हो जाती हैं और उनके स्वास्थ्य में गिरावट आती है। आज के वैज्ञानिक युग में भी बाल– विवाह, दहेज प्रथा और अन्य कुरीतियाँ विद्यमान है, जो कि महिला स"ाक्तिकरण के मार्ग में बाधक हैं कुछ संस्कृतियों के रखवाले और खाप पंचायते आज भी अंधवि"वास के मार्ग पर अग्रसर हैं जो कि महिलाओं की प्रगति और सामाजिक बंधनों के लिये अनिवार्य नहीं हैं। क्या अन्तर्जातीय विवाह कलंक हैं समाज पर? सजातीय विवाह होना क्या आव"यकता है? अगर सड़क पुरानी और टूट जाये तो क्या उसकी मरम्मत या नई सड़कों का निर्माण नही होता है, इसी प्रकार से पुरानी लीक से हटकर ि"ाक्षित समाज को एक नई दि"ाा की तरफ अग्रसर होना चाहिये जब प्रत्येक व्यक्ति अपना अच्छा–बुरा समझता है तो उसे अधिकार देने में इतनी देरी क्यों?

शोषण जैसे नारी की नियती बन गया है। प्राचीन युग से आज तक नारी पिसती ही चली आ रही है। पहले यह शोषण केवल शारीरिक या भावनात्मक स्तर पर ही होता था पर वर्तमान युग में अर्थतंत्र भी नारी की गर्दन पर सवार हो गया है। समाज में व्याप्त बुराईयों को स्त्री–पुरूष मिल– जुल कर ही दूर कर सकते है। मानसिकता में परिवर्तन करना भी अति आव"यक है। भारतीय संस्कृति को अपना कर जीवन शैली में परिवर्तन करना होगा जिससे श्रद्धा और सेवा की भावना हृदय में बनी रहेगी।

सन्दर्भ सूचीः–

1. य"ापाल जैन, श्रीमन्नारायण – व्यक्ति और विचार, सस्ता साहित्य मण्डल प्रका"ान, नई दिल्ली, 1979, पृष्ठ– 251
2. शंकर राव लोंढे, जानकी देवी बजाज– स्त्री शक्ति की महिमा, राष्ट्र भाषा प्रेस, हिन्दी नगर वर्धा, पृष्ठ–8
3. एल0पी0"ार्मा, प्राचीन भारत, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, सं"ाोधित संस्करण 2007, पृष्ठ– 16
4. उपरोक्त, पृष्ठ– 249
5. डॉ0 मधुकर श्याम चतुर्वेदी एवं डॉ0 इनाक्षी चतुर्वेदी, प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 2021, पृष्ठ– 548
6. श्रीमन्नारायण, आधुनिक भारत के निर्माता जमनालाल बजाज, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, 1976, पृष्ठ– 204
7. शंकर राव लोंढे, जानकी देवी बजाज– स्त्री शक्ति की महिमा, राष्ट्र भाषा प्रेस, हिन्दी नगर वर्धा, पृष्ठ– 8
8. हरिभाऊ उपाध्याय, श्रेयार्थी जमनालाल जी, सत्यसाहित्य प्रका"ान, नई दिल्ली, 1951, पृष्ठ– 165
9. महात्मा गाँधी, रचनात्मक कार्यक्रम, नव जीवन प्रका"ान, पृष्ठ 32– 34
10. डॉ0 ए0 पी0 अवस्थी, भारतीय राजनीतिक विचारक, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2002, पृष्ठ– 207
11. भवानी प्रसाद मिश्र एवं य"ापाल जैन, समर्पण और साधना, सस्ता साहित्य मण्डल प्रका"ान, नई दिल्ली, 1973, पृष्ठ– 14
12. महात्मा गाँधी, यंग इण्डिया, 17.10.1929

****